

# Which Sadhana is Best?

कौन सी साधना उत्तम है?

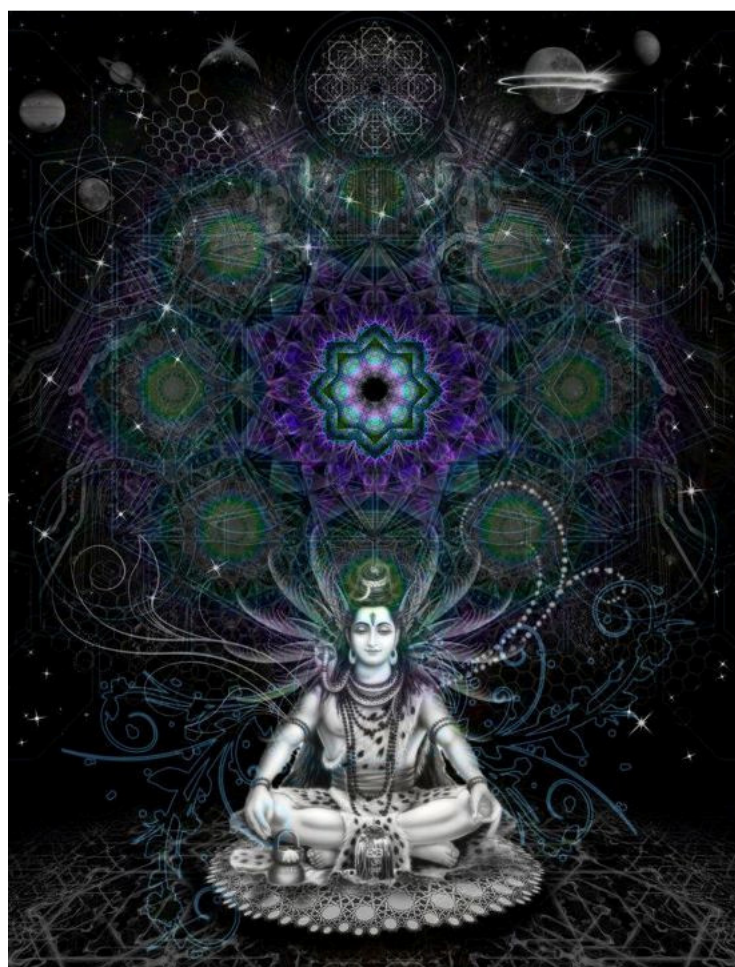
Sumit Girdharwal

9410030994, 9540674788

sumitgirdharwal@yahoo.com

[www.yogeshwaranand.org](http://www.yogeshwaranand.org)

[www.baglamukhi.info](http://www.baglamukhi.info)



Sumit Girdharwal Ji & Sri Yogeshwaranand Ji

+91-9540674788, +91-9917325788 Email : shaktisadhna@yahoo.com

[www.baglamukhi.info](http://www.baglamukhi.info) , [www.yogeshwaranand.org](http://www.yogeshwaranand.org)

विश्व के पटल पर अनेकों साधक ऐसे हैं, जो निरन्तर साधना में रत रहते हैं, परन्तु उन्हें अभीष्ट की प्राप्ति नहीं होती। इसी प्रकार अनेकों साधक ऐसे भी हैं, जिन्हें कुछ ही समय की साधना कर लेने के उपरान्त ही उनके अभीष्ट की प्राप्ति हो जाती है।

साधना दो प्रकार की होती है— निष्काम और सकाम। ‘निष्काम-साधना’ उसे कहा जाता है, जो बिना किसी फल प्राप्ति की इच्छा से की जाती है। ‘सकाम-साधना’ उसे कहा जाता है जो किसी कामना के उद्देश्य से की जाती है।

एक प्रश्न यहां यह भी उत्पन्न हो सकता है कि निष्काम भाव से तो कोई भी व्यक्ति साधना करता ही नहीं है। भले ही वह सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए साधना न करे परन्तु तो भी उसकी साधना के पीछे आध्यात्मिक सुख-प्राप्ति की इच्छा तो होती है। यह किसी सीमा तक सत्य भी है। व्यक्ति की यह प्रकृति होती है कि वह बिना किसी फल की इच्छा के कोई भी कार्य सम्पादित नहीं करता। लेकिन फिर भी यदि व्यक्ति की साधना के पीछे ईश्वर प्राप्ति, उस परमात्मा के प्रति अनुराग और अपनी आध्यात्मिक उन्नति की चाह में साधना सम्पन्न करते हुए उसे परमात्मा अथवा अपने को ही समर्पित कर देने की भावना हो, तो वह भी निष्काम भाव से की जाने वाली साधना ही कही जाती है। इसके विपरीत जब साधना के पीछे चारों पुरुषार्थों— धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की चाह हो तो वह सकाम साधना ही कही जाती है।

भेद स्वरूप में साधना तीन प्रकार की होती है— सात्विक, राजसिक और तामसिक। इसी प्रकार प्राणी की प्रकृति भी तीन प्रकार के शरीरों में विद्यमान होती है— उत्तम, मध्यम और अधम। अतः मानव-प्रकृति के अनुसार ही साधना भी उत्तम, मध्यम और अधम भेदों में विभाजित कर दी गयी है, जैसा कि ‘रुद्रयामल तन्त्र’ में कहा गया है—

**शरीरं त्रिविधं प्रोक्तमुत्तमाधम-मध्यमम्।**

**तत्रैव त्रिविधं प्रोक्तमुत्तमाधम-मध्यमम्॥**

इसलिए जिस प्राणी की जिस प्रकार की प्रवृत्ति होती है, उसके लिए उसी प्रकार की साधना उपयुक्त है। जिस साधक की जैसी मनोभूमि हो उसके लिए उसी प्रकार की साधना फलदायी होती है। सात्विक प्रवृत्ति के उपासकों के लिए 'दिव्याचार' लाभदायक होता है। रजोगुण की प्रवृत्ति वाले साधकों के लिए 'पश्वाचार' कल्याणकारी होता है और तमोगुणी साधक के लिए 'वामाचार' सिद्धप्रद होता है। एक तमोगुण सम्पन्न साधक कभी भी सात्विक साधना में सिद्धि प्राप्त नहीं कर सकता, क्योंकि यह साधना उसकी मनोवृत्ति के अनुसार नहीं है। जिस प्रकार एक क्रूर स्वभाव के व्यक्ति को किसी जीव की सेवा-सुश्रुषा के लिए नियुक्त कर दिया जाए तो यह कर्म उसके मन के अनुकूल नहीं है, अतः उसके लिए यह सब अरुचिकर ही होगा। इसी प्रकार एक अच्छी मनोवृत्ति वाले व्यक्ति को यदि बूचड़खाने में नियुक्त कर दिया जाए तो वहां के अकृत कार्यों में कभी भी उसकी रुचि हो ही नहीं सकती, न ही वह अपने कार्य में सफलता प्राप्त कर सकेगा। अपने स्वभाव अथवा मनोवृत्ति के विपरीत कार्य करने से मन में आनन्द उत्पन्न नहीं होता, केवल उस कार्य के प्रति विरक्ति ही उत्पन्न होती है। जब तक किसी कार्य को करने से मन उल्लसित, आनन्दयुक्त और स्फूर्तियुक्त न हो तब तक किसी भी कार्य में सिद्धि प्राप्त की ही नहीं जा सकती। इसलिए यह आवश्यक है कि साधक की प्रकृति, मनोवृत्ति जिस प्रकार की हो, उसे अपने लिए उसी वृत्ति वाली साधना का चयन करना चाहिए। यही कारण है कि तमोगुण वाले व्यक्ति को तामसी साधना, रजोगुण सम्पन्न व्यक्ति को राजसी साधना और सत्वगुण सम्पन्न व्यक्ति को सात्विक साधना ही मंगलकारी होती है।

साधक की क्षमता के अनुसार तीन प्रकार के भाव निर्दिष्ट हुए हैं। जिनमें प्रथम भाव— दिव्य, दूसरा भाव— पशु और तीसरा भाव— वीर-भाव कहलाता है। ये

Sumit Girdharwal Ji & Sri Yogeshwaranand Ji

+91-9540674788, +91-9917325788 Email : shaktisadhna@yahoo.com

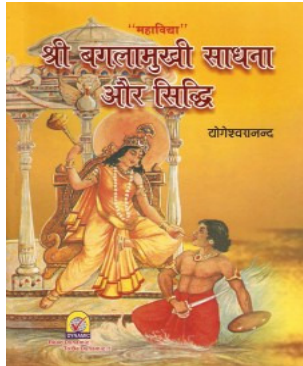
www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

तीनों भाव सात आचारों से बने हैं। सातों आचार इस प्रकार हैं— (1) वेदाचार अथवा वैदिक आचार (2) वैष्णवाचार (3) शैवाचार (4) दक्षिणाचार (ये चारों आचार “पशु-भाव” के अन्तर्गत आते हैं।) (5) सिद्धान्ताचार (6) वामाचार (ये दोनों आचार “वीर-भाव” के अन्तर्गत आते हैं।) (7) कौलाचार (यह आचार “दिव्य-भाव” के अन्तर्गत आता है।)

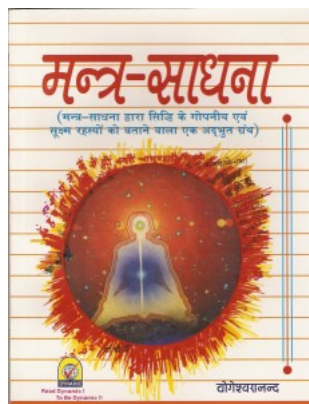
‘पशु-भाव’ में साधक की स्थिति पशुतुल्य ही समझी जाती है। पशु का अर्थ है— अज्ञान। अर्थात् जो व्यक्ति अज्ञान की अवस्था में हो, पाशबद्ध हो, उसका भाव पशु-भाव समझा जाता है। जीवन के प्रथम 16 वर्ष अज्ञानावस्था का काल समझे जाते हैं; इस समय तक की मनोवृत्तियों को ही पशु-भाव कहा जाता है। सत्रहवें वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की अवस्था में व्यक्ति को ज्ञान उत्पन्न होता है और उसमें “वीर-भाव” उत्पन्न हो जाता है। यदि इस अवस्था में भी प्राणी को ज्ञान उत्पन्न नहीं होता तो उसे पशु-भाव में ही समझा जाता है। इक्यावनवें वर्ष से लेकर वृद्धावस्था तक व्यक्ति के ज्ञान में परिपक्वता आ जाती है जिसे ‘दिव्य-भाव’ समझा जाता है। जब तक जीव को ज्ञान प्राप्त नहीं होता तब तक उसे पशु-भाव में, जब ज्ञान उत्पन्न हो जाए तो उसे वीर-भाव में और जब ज्ञान परिपक्व हो जाए तो उसे दिव्य-भाव में माना जाता है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि साधक जिस समय जिस प्रकार के ज्ञान से सम्पन्न हो, अर्थात् जिस समय उसकी मनोवृत्ति जिस प्रकार की हो, उसके अनुसार ही उसे आचार का आश्रय लेना चाहिए, तभी उसे साधना में सफलता प्राप्त हो सकती है।

## OUR BOOKS

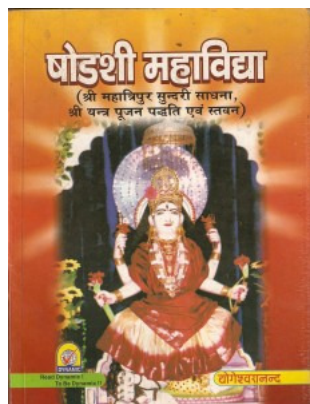
Baglamukhi Sadhana Aur Siddhi Rs – 350/=



Mantra Sadhana Rs – 280/=

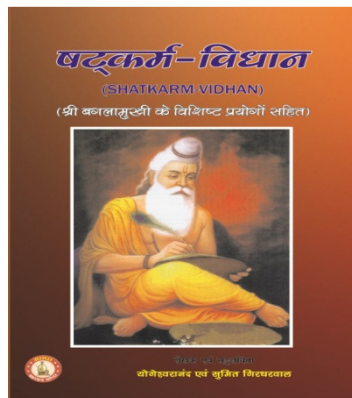


Shodashi Mahavidya (Tripurasundari Sadhana Sri Yantra Pooja) - Rs 370/=

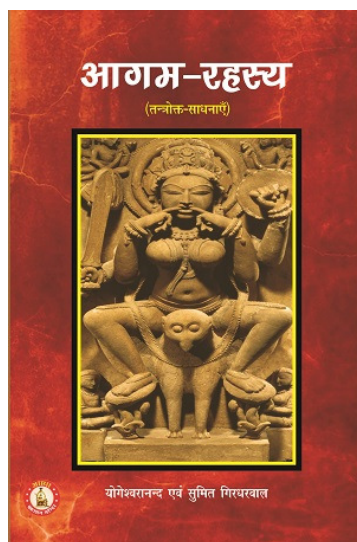


Sumit Girdharwal Ji & Sri Yogeshwaranand Ji  
+91-9540674788, +91-9917325788 Email : shaktisadhna@yahoo.com  
www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

Shatkarma Vidhaan Rs – 380/=



Agama Rahasya Rs – 500/=



If you want to purchase any of our book then please deposit respective amount in below a/c –

**Sumit Girdharwal**

**Axis Bank**

912020029471298 (Current A/C)

IFSC Code – UTIB0001094

And send the receipt to our email [sumitgirdharwal@yahoo.com](mailto:sumitgirdharwal@yahoo.com) or whatsapp +91-9540674788

Sumit Girdharwal Ji & Sri Yogeshwaranand Ji  
+91-9540674788, +91-9917325788 Email : shaktisadhna@yahoo.com  
[www.baglamukhi.info](http://www.baglamukhi.info) , [www.yogeshwaranand.org](http://www.yogeshwaranand.org)